विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

बेहद गंभीर है एक साल में सात लाख बुजुर्गों का न्यायालय के द्वार खटखटाना

एक तरफ यह माना जा रहा है कि 2050 आते-आते देश का हर पांचवां नागरिक बुजुर्ग होगा तो दूसरी और बुजुर्गो के साथ असम्मान में दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ोतरी हो रही है। हालिया रिपोर्ट के अनुसार पिछले एक साल में सात लाख बुजुर्गों ने अदालतों के द्वार खटखटाये हैं। जबकि इससे पहले ही पिछले साल तक अदालतों में बुजुर्गों द्वारा दर्ज कराये गये पांच साल से अधिक के 20 लाख से अधिक मामलें न्याय के लिए लंबित चल रहे हैं। सवाल यह नहीं है कि अदालतों में कितने मामलें लंबित है या सवाल यह भी नहीं है कि कितने समय से लंबित है या सवाल यह भी नहीं है कि अदालतों में बुजुर्गों से संबंधित मामलों के निर्णय में क्यों देरी हो रही है? बल्कि सीधा-सीधा सवाल यह है कि समाज में बुजुर्गों के प्रति असम्मान में क्यों बढ़ोतरी हो रही है। केवल और केवल एक साल में सात लाख मामलों का सामने आना हमारे समाज की बुजुर्गों के प्रति असहिष्णुता को स्पष्ट रुप से दर्शाता है। एक और हमारी संस्कृति और सभ्यता में बुजुर्गो के सम्मान सिखाया जाता रहा हैं वहीं अब समाज के वरिष्ठ नागरिकों द्वारा न्यायालय का दरवाजा खटखटाना बेहद चिंता का विषय हो जाता है।

एक साल में सात लाख मामलों में कुछ कम ज्यादा हो सकता है पर आंकड़ा सात लाख के आसपास से कम इस मायने में नकारा नहीं जा सकता कि अदालतों में दर्ज होने वाले प्रकरणों की मोनेटरिंग होती है। अब सवाल सीधा-साधा यह हो जाता है कि एक साल में सात लाख मामलें सामने आने का मतलब साफ साफ है कि असलियत में इस तरह के मामलें कई गुणा होंगे। साफ है अदालत या पुलिस में कैस दर्ज कराने के हालात बहुत ही अति की स्थिति में होते हैं। एफआईआर या अदालत में इश्तगाशा कराना आम आदमी के लिए ही मुश्किल भरा काम होता है तो किसी बुजुर्ग से इस तरह की आशा करना बेमानी ही होगा। दरअसल कोई भी आदमी मेरा मतलब आम आदमी से भी है कि उसके द्वारा भी पुलिस थानों या वकीलों और अदालतों के चक्कर लगाने से बचने की ही कोशिश की जाती है। फिर बुजुर्ग की तो अपनी सीमाएं होती हैं। कोर्ट-कचहरी तक जाने से आज भी आम आदमी डरता है। हांलाकि न्यायालयों के प्रति आम आदमी का विश्वास बरकरार है चाहे उसमें देरी कितनी भी हो रही हो।न्याय में विश्वास का ही परिणाम है कि न्यायालयों में वादों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है।

सवाल सीधे सीधे यह हो जाता है कि समाज में बुजुर्गों के प्रति असम्मान के हालात कैसे बन रहे हैं। चिंतनीय यह भी हो जाता है कि आज देश में औसत आयु में बढ़ोतरी हुई है तो युवा जनंसख्या के आधिक्य के साथ ही 2050 तक सीनियर सिटीजन्स की संख्या बढ़ेगी ही, इसलिए एक और जहां सरकारों को अभी से नई रणनीति बनानी होगी वहीं समाज विज्ञानियों और समाज विज्ञान के अध्येताओं को समाज में बुजुर्गों के प्रति बढ़ रही असहिष्णुता के कारणों को खोजना होगा। हांलाकि आज आर्थिक युग आ गया है। प्रतिस्पर्धा और आपा-धापी के दौर में संबंधों की डोर कमजोर होती जा रही है। परिवार के कमजोर व्यक्ति को सहारा देना बीते जमाने की बात होती जा रही है तो बुजुर्गों से तालमेल बैठाना भी मुश्किल होता जा रहा है। इसमें भी कोई दो राय नहीं कि बुजुर्गों के साथ ज्यादती या अन्याय या असहिष्णुता घर और बाहर दोनों जगह देखने को मिल रही है। आम बुजुर्ग की चाहत ही कितनी है, दो जून की सम्मान की रोटी, सद्व्यवहार और प्रेम के दो बोल। पर समस्या इसको लेकर होने के साथ ही कुछ नए आयाम जुड़ते जा रहे हैं। देखा जाए तो आज बुजुर्गों के जो मामलें सामने आ रहे हैं उनमें प्रापर्टी विवाद, किरायेदारों से मकान खाली कराने, सरकार या परिजनों से गुजारा भत्ता, पेंशन के विवादित प्रकरण या फिर पारिवारिक हिंसा के कुछ मामलें हो सकते हैं तो कुछ हद तक बदलते हालातों में संतान द्वारा तंग या परेशान करने के मामलें भी सामने आ रहे हैं। स्वास्थ्य संबंधी भी एक समस्या है पर वह न्यायालयों तक जाने का मामला नहीं बनती।

> **परिवार के कमजोर व्यक्ति को सहारा देना बीते जमाने की बात होती जा रही है तो बुजुर्गों से तालमेल बैठाना भी मुश्किल होता जा रहा है। इसमें भी कोई दो राय नहीं कि बुजुर्गो के साथ ज्यादती या अन्याय या असहिष्णुता घर और बाहर दोनों जगह देखने को मिल रही है। आम बुजुर्ग की चाहत ही कितनी है, दो जून की सम्मान की रोटी, सद्व्यवहार और प्रेम के दो बोल।**

आज देश दुनिया ने काफी तरक्की की है। सुविधाओं का विस्तार हुआ है। जीवन स्तर में बदलाव आया है। जीवन जीना आसान हुआ है। पर इन सबके बीच मानवीय संवेदनाएं कहीं खो गई है। ऐसे उदाहरण आम है कि इकलोती संतान रोजगार के लिए विदेश जाती है और फिर वहीं की होकर रह जाती है। इनमें से अधिकांश का प्रयास यह होता है कि पारिवारिक संपत्ती को बेच बिचा कर चले जाएं और फिर वहीं के होकर रह जाए। समस्या यहां तक आती है कि बुजुर्ग परिजनों के पास गुजारा करने लायक नहीं रहता तो दूसरी और इस उम्र में जहां दो शब्द सहानुभूति की आवश्यकता होती है उसमें उन्हें अकेले रहने को मजबूर होना पडता है। जरुरी नहीं है कि बेटा-बेटी विदेश में ही हो देश में भी नौकरी के कारण दूसरी जगह होंगे और फिर उनकी प्राथमिकता कुछ और ही हो जाती है। परिवार पति-पत्नी और बच्चों तक ही सीमित होकर रह जाता है। स्वार्थ कहीं ज्यादा हो जाता है और घर परिवार के प्रति अपने दायित्वों से दूर होकर परिजनों में कमियां देखना ही बाकी रह जाता है।

कोई भी परिवार के प्रति अपने कर्तव्य या जिम्मेदारी की बात नहीं करता अपितु एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप व बुजुर्गों में कमियां निकालने में ही अपनी बहादुरी समझने लगते हैं। यह सोच अब रहा ही नहीं कि मैं माता-पिता या बुजुर्गो के लिए क्या कर रहा हूं अपितु सोच यह होता जा रहा है कि माता पिता या बुजुर्ग ने क्या कमी छोड दी। दोषारोपण ही रह गया है। खैर यह विषयांतर होगा पर विचारणीय मुद्दा यह है कि जब एक साल में सात लाख मामलें इस तरह के सामने आ रहे हैं जो न्यायालयों में पहुंचे है तो कल्पना करने की बात यह है कि वास्तव में इस तरह के मामलें बहुत अधिक ही होंगे। कल्पना करके सिहर जाना चाहिए कि देश में बुजुर्गों के हालात क्या से क्या होते जा रहे हैं। क्योंकि आम बुजुर्ग ना तो पुलिस में शिकायत कराने जा सकता और ना ही अदालतों के फेरे लगाने को तैयार हो सकता। ऐसे में यह साफ है कि सात लाख बुजुर्गों ने तो केवल समाज को आईना दिखाने का काम किया है जबकि ना जाने कितने ही बुजुर्गों के साथ अमानवीय व्यवहार हो रहा होगा। यह सब तो तब है जब स्वास्थ्य से लेकर जीवन यापन तक सहज हुआ है। सरकारी नौकरी से रिटायर होने का मतलब पेंशन के माध्यम से सुरक्षा है तो अन्य हालातों में सामाजिक सुरक्षा पेंशन लगभग सभी राज्यों में दी जा रही है। सरकारों द्वारा सीनियर सिटीजन्स को विशेष दर्जा देकर सुविधाएं उपलब्ध कराने लगी है। ऐसे में इस तरह की समस्या उभरना निश्चित रुप से गंभीर हो जाती है।

सात लाख के आंकड़े से सरकारों, समाज चिंतकों और सामाजिक विज्ञान के अध्येताओं को गंभीरता से कारणों की तह तक जाना होगा नहीं तो कितनी से सुविधाओं का विस्तार हो, कितने ही रैन बसेरे खुले, कितने ही वृद्धाश्रम खोले जाएं, समस्या का समाधान संभव नहीं लगता। अभी तो यह चेतावनी है पर आने वाले समय में हालात विकराल होने का संकेत भी है ऐसे में सोचने और बहुत कुछ करने की दरकार हो जाती है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

चांद, लोक और विज्ञान

दशरथ कुमार सोलंकी

लोक की रोचकता दृष्टि में समाए बिंब और इसके बारे में निर्धारित परिकल्पनाओं से निर्मित हुई। हमने भरे-पूरे चांद में एक पेड़ देखा, उसकी छांव में बूढ़ी अम्मा को सूत कातते देखा। तब दृष्टि ही हमारा (वि)ज्ञान था। जाने कब से अम्मा सूत कात रही होगी। क्या वह थक नहीं गई होगी। कितना सूत इक्कठा हो गया होगा चांद पर ?

हमारे बालपन ने इन किस्सों से चांद की छवि बनाई। वह हमें अपना-सा लगने लगा। चंदा मामा बनकर हमारी कहानियों, किताबों और विचारों में बसा वह। सोचते, कभी मामा आएंगे, वहां कता हुआ सूत हमें भेज देंगे। खाट बुनेंगे या कपड़ा, हम सोचते। लोक का यह चंद्र-निरूपण कितना आत्मीय था। कि हम गाते थे, गाते हैं– 'चंदा मामा दूर के.....!'

फिर चंद्र अपनी छवि के उजलेपन से कवि की कल्पना में उतरा। वह कविताओं-गजलों में प्रेयसी के मुखड़े की उपमाओं का आधार बना। चांद तब हमारे और करीब आया। साहित्य ऐसे ही किसी अगम्य वस्तु या पिंड को हमारा अपना बना देता है। चंद्र को न देख सकें, महबूबा तो दिखती है ना! पूरे महीने ज्योत्सना के दीदार भले न हो, प्रेमिका का सलोनापन उस कमी की पूर्ति करता। हमने चांद को इस तरह धरती पर उतारा, शायरी में बसाया, कविताओं में ढाला। प्रेमिकाओं को चंद्र की उपमा देकर प्रेमी प्रसन्न हुए। चंद्र से संबंध का यह साहित्यिक निरूपण था।

विज्ञान का विस्मय रोचकता का एक विशिष्ट अध्याय है। विज्ञान तथ्यपरक है इसलिए कठोर भी। विज्ञान कल्पना की बात नहीं करता, सत्य का उद्घाटन करता है। सत्य भला कब नरम हुआ है। विज्ञान ने चांद की सतह के खुरदरेपन के भेद खोले तो लोक की कल्पनाएं ध्वस्त हुईं, कवियों की उपमाएं आहत हुईं। पर कल्पना से सत्य की यात्रा का यह स्वाभाविक मोड़ है, इसे सहजता से लिया जाना चाहिए। चांद के गड्ढों को हम जानने लगे, उसकी सतह के राज खुलने लगे, हम चांद पर जाने लगे। पर लगभग चार लाख किलोमीटर की दूरी पर चांद अनंत काल से पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा। लोक अपनी कल्पना उस अनवरत संबंध से बनाता है। भगिनी भले ही उम्र या आकार में बड़ी हो, भ्राता का दायित्व चांद पूरे मनोयोग से निभा रहा। उसकी परिक्रमा करके, किसी सुविचारित दायित्वबोध की पूर्ति करता। हम पृथ्वीवासियों को अपनी कलाओं, चंद्रिका, ज्वार भाटे आदि से प्रभावित तो करता ही, ज्योतिष के अनुसार हमारे मन को भी प्रभावित करता।

बहुत बड़ा है चांद.....हम उसके अत्यंत मामूली हिस्से का पर्यवेक्षण करने निकले हैं। यह भावभरा है कि राखी से ठीक पहले पृथ्वी से चांद पर कोई संदेसा गया है। रोवर एक दायरे में अपना काम करेगा। पर वो पेड़, वो बुढ़िया, वो सूत। वे तो हैं वहां। चांद के किसी किसी कोने में हमारी कल्पनाओं का वह पेड़ खड़ा होगा, बुढ़िया उसके नीचे लगातार सूत कात रही होगी। हमारी कल्पनाओं के चांद में उनका बने रहना लोक की थाती का सजीवत रहना है।

बहरहाल..... विज्ञान ने मानवता की राह में एक और मील का पत्थर स्थापित कर दिया है। विज्ञान की जयकार होनी चाहिए। जय विज्ञान।

–दशरथ कुमार सोलंकी,
निदेशक वित्त,
जोधपुर विकास प्राधिकरण,
जोधपुर

चुनावी समर-सक्षम और जीत ही टिकट का आधार

राजेन्द्र जोशी

राजस्थान में विधानसभा चुनाव के लिए राजनैतिक पार्टियों में चुनावी कसरत प्रारंभ हो चुकी है। दोनों ही पार्टियां अखाड़े में कूद चुकी है। अब इन अखाड़ों के पहलवान कौन हो उसकी कवायद भी तेज हो चुकी है। अभी पार्टियों ने कुछ क्राइटेरिया तय किया है। राजनैतिक पार्टी अपना क्राइटेरिया तय करती है, कुछ पार्टियां राजनैतिक परिवार को विरासत सौंपते हुए उन्हें आगे बढ़ाती है, तो कुछ जगह पर नया परिवार सामने आता है।

इन दिनों प्रदेश में कांग्रेस और भाजपा के पर्यवेक्षक ब्लॉक स्तर पर आवेदन आमंत्रित कर रहे हैं। यह सारी कवायद टिकट वितरण तक धरी रह जाएगी, जब दोनों पार्टियां एक ही बात तय करेगी की राजनीतिक रूप से अभ्यर्थी जिताऊ होना चाहिए बिकाऊ हो या ना हो यह चुनाव के बाद पता चलेगा। चुनाव के बाद जिसका पलड़ा भारी होगा उधर जीते हुए कैंडिडेट जा भी सकेंगे?

अभी कोई खुद के लिए टिकट मांग रहा है, कोई अपने बेटे को विरासत सौपना चाहता है, कोई पत्नी के लिए और कुछ लोग अपने नाती-रिश्तेदारों के लिए भी टिकट की जुगाड़ में लग रहे हैं। अभी तो राजनैतिक दल चुनाव लड़ने की उम्र तय कर रहे है। परंतु पिछले चुनावो के अनुभव से यह देखा गया है की टिकट वितरण करते समय ना तो उम्र को देखा जाएगा और ना ही पीछे हारे हुए या जीते हुए को आधार बनाया जाएगा। राजनैतिक पार्टियों में चुनाव के लिए टिकट वितरण में कोई आधार नहीं रहेगा। केवल एक ही आधार है कि वह चुनाव लड़ने के लिए साधन सुविधा उपलब्ध कराने में सक्षम होना चाहिए, पैसा पानी की तरह बहाने की क्षमता रखता हो और इन सबके बावजूद जिताऊ होना चाहिए।

पहले टिकाऊ भी देखा जाता था पर अब टिकाऊ का कोई आधार नहीं है जिस दल की सरकार होगी उधर टिक जाएगा जीता हुआ व्यक्ति। सबसे बड़ी बात आज भी यह है कि दोनों ही पार्टियां अपने-अपने स्तर पर चुनावी मैदान में सक्षम उम्मीदवारों को खोज रही हैं। यह कोई नौकरी तो है नहीं की जिसमें योग्यता निर्धारित की जाए। चुनावी समर में सक्षम और जीत ही योग्यता मानी जाती है। अभी सक्षम और जीत की पहचान का वक्त है । फिर चाहे वह 80 या 90 वसंत भी क्यों ना देख चुका हो। यह योग्यता रखता है तो चुनाव का टिकट आसानी से मिल जाएगा।

लेखक हिन्दी-राजस्थानी के साहित्यकार एवं सामाजिक कार्यकर्ता है।

–राजेन्द्र जोशी
कवि-कथाकार

दो लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने डिग्गी पहुंचकर श्रीजी के दर्शन किये

मालपुरा, (निसं)। धर्मनगरी डिग्गी में विराजित कल्याणधणी की एक झलक पाने की मन में ईच्छा लिये हजारों किलोमिटर से नंगे पांव पैदल चलकर

- **पदयात्रा में शामिल श्रद्धालुओं ने शुक्रवार को पदयात्रा का अन्तिम पड़ाव चोसला में किया**
- **आज चढ़ेगा लक्खी पदयात्रा का कल्याणधणी मंदिर शिखर पर शाही निशान**

कल्याणधणी के दर्शन के लिये पैदल व कनक दण्डवत करते लाखों श्रद्धालु डिग्गी पहुंच रहे हैं।

हाथों में धर्म ध्वजा लहराते तो कनक दण्डवत करते 2 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने डिग्गी पहुंचकर श्रीजी के दर्शन कर दरबार में मत्था टेका।

58वें लक्खी मेले के लिए जयपुर से रवाना हुई लक्खी पदयात्रा में शामिल लाखों श्रद्धालुओं ने शुक्रवार को पदयात्रा का अन्तिम पडाव चोसला में किया तथा रातभर भजन संध्या व संकीर्तन का आयोजन किया गया। भजन संध्या में राजस्थानी कलाकारों ने एक से बढ़कर एक लोकनृत्य की प्रस्तुतियों से दिनभर पैदल चलकर पहुंचे कल्याण भक्तों की थकान मिटाकर श्रीजी के भजनों पर झूमने को विवश कर दिया। धर्मनगरी डिग्गी की और आने वाले सभी मार्गों से गूंज रहे जयश्री कल्याण के जयकारों से डिग्गीधाम से 20 किमी. की परिधि में वातावरण धर्ममय हो गया। यादव समाज सहित श्रीजी भंडारा परिवार व श्याम मित्र मंडल के चल रहे भंडारों में सुबह से मध्य रात्रि तक कल्याण भक्तों को पंगत प्रसादी करवा सेवादार बने कल्याण भक्त पैदल यात्रियों के पांव दबाने तो पांव में मालीश करने सहित सेवाचाकरी में जुटे हुए हैं। शुक्रवार को सवेरे मंगला आरती के दर्शनों के लिए पहुंचे लाखों पदयात्रियों से चौपड़ चौराहे से मंदिर तक भारी भीड़ रही। जैसे-जैसे सूरज की किरण फैलती गई वैसे-वैसे डिग्गी में श्रीजी भक्तों का सैलाब उमडता गया।

विधायक कन्हैयालाल चौधरी, उत्तराखण्ड विधायक भरत सिंह चौधरी, विधानसभा विस्तारक सुमित आचार्य ने श्रीजी भंडारे में पहुंच 2 घंटे से अधिक समय तक सेवाचाकरी कर पूण्य अर्जित किया। धर्मनगरी डिग्गी से महज 10 किमी. की दूरी पर ठहरे लक्खी पदयात्रा के पदयात्रियों के साथ यात्रा संयोजक श्रीजी शर्मा शनिवार को भव्य जुलूस के साथ डिग्गी पहुंच कर मंदिर शिखर पर पदयात्रा का केसरिया शाही निशान चढायेंगे। चौसला पहुंची लक्खी पदयात्रा की मिली सूचना पर डिग्गी थानाधिकारी अयूब खान ने पदयात्रियों का स्वागत कर सुरक्षा व्यवस्थाऐं चाक-चौबंद की।

हेमलता राजे के नेतृत्व में होने वाली पदयात्रा की सफलता के लिए पूजा-अर्चना

जोधपुर, (कासं)। मारवाड़ में अमन चैन व खुशहाली के लिए पूर्व महारानी हेमलता राजे के नेतृत्व तथा सैनाचार्य अचलानन्द गिरि महाराज के सानिध्य में जोधपुर से बाबा रामदेव मंदिर रामदेवरा तक एक सितंबर से की जा रही पदयात्रा की सफलता के लिए शुक्रवार को प्रात: रातानाडा स्थित गणेश मंदिर में पूजा अर्चना की गई व ध्वज पूजन किया गया। इस अवसर पर हेमलता राजे व सेनाचार्य स्वामी अचलानंन्द गिरी महाराज ने पूजा अर्चना कर ध्वज पूजन किया। ध्वज पूजन के बाद राइका बाग स्थित जुगल जोड़ी बाबा रामदेव मंदिर में स्थापित किया गया।

हेमलता राजे ने इस अवसर पर कहा कि जोधपुर से रामदेवरा तक की उनकी पदयात्रा का उद्देश्य देश व मारवाड़ में सद्भाव व खुशहाली की कामना करना है। उन्होंने कहा कि लोक देवता बाबा रामदेव कहते थे कि हर जाति, हर समाज के व्यक्ति उनके यहां आएं। उन्होंने इस अवसर पर महाराजा उम्मेद सिंह, महाराजा हनवन्त सिंह व महाराजा गजसिंह के संदेश की भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सभी धर्म के लोगों में आपसी भाईचारा व अमन चैन बना रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि महाराजा उम्मेद सिंह कहते थे कि हिंदू व मुस्लिम मेरी दोनों आंखों के समान है। महाराजा हनवन्त सिंह जी ने कहा था कि मैं थांसू दूर नहीं व पूर्व महाराजा गज सिंह का कहना है कि म्हारी ओलखांण मारवाड़ी की जनता सू है।

सैनाचार्य अचलानंद गिरी महाराज ने इस अवसर पर कहा कि लोक देवता बाबा रामदेव ने सभी का कल्याण किया। वर्ष भर लाखों श्रद्धालु रामदेवरा उनको धोक देने जाते हैं। सभी जाति व धर्म के लोग उनकी पूजा अर्चना करते हैं। उन्होंने कहा कि यह पदयात्रा महारानी हेमलता राजे के नेतृत्व में होगी। उन्होंने कहा कि पदयात्रा का उद्देश्य वासुधैव कुटुंबकम, पर्यावरण संरक्षण व नशा मुक्ति एवं नारी शक्ति को समर्पित है। इस अवसर पर रघुवीर सिंह भदावत, मदन सेन, विष्णुचंद प्रजापत, नरेंद्र पंवार, श्याम बाबू व दीपक बागड़ी सहितअनेक श्रद्धालु उपस्थित थे।

पदयात्रा की सफलता के लिए रातानाडा स्थित गणेश मंदिर में पूजा अर्चना की गई व ध्वज पूजन किया।

रामदेवरा तक हो रही इस पदयात्रा का जोधपुर से लेकर रामदेवरा तक जगह-जगह सभी धर्म में समाजों के लोगों द्वारा स्वागत किया जाएगा। लोगों द्वारा महारानी हेमलता राजे के नेतृत्व व सैनाचार्य अचलानन्द गिरी महाराज के सानिध्य में निकल रही पदयात्रा के प्रति उत्साह है। गणेश मंदिर परिसर में पदयात्रा में शामिल होने वालों का बाबा रामदेव जी का दुपट्टा ओढाकर व यात्रा बैज प्रदान कर स्वागत किया गया गया। इस अवसर पर मेहरानगढ़ बैंड की स्वर लहरियां भी गूंजी। ढोल-थाली के साथ गणेश मंदिर परिसर में स्वागत किया।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 26 अगस्त, 2023

द्वि. सावन मास (शुद्ध), शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, ज्येष्ठा नक्षत्र प्रात: 8:38 तक, विष्कुम्भ योग सांय 4:26 तक, तैतिलकरण दिन 1:06 तक, चन्द्रमा प्रात: 8:38 से धनु राशि में संचार करेगा।

आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज अश्वत्थ मारूती पूजन, अगस्त्य उदय दिन 11:33 पर होगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:42 से 9:18 तक, चर 12:29 से 2:04 तक, लाभ-अमृत 2:04 से 5:15 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:07, सूर्यास्त 6:50

मेष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। मित्रों/रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं। स्वास्थ्य के संबंध में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। नवीन कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।

मिथुन

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

तुला

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

धनु

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

मकर

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। मानसिक तनाव बना रहेगा।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।